बाळबोध जैनधर्म.

भाग १ लो.

कर्ता—

स्व० बाबू दयाचन्द गोयलीय जैन, बी० ए०

अनुवादक अने प्रकटकर्ता:—

मूळचन्द किसनदास कापडिया,

दिगम्बर जैन पुस्तकालय, चन्दावाडी–सूरत।

आवृत्ति २ जी] वीर सं० २४५४ [प्रत १०००

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस–सूरतमां मूलचंद किसनदास कापडियाए छाप्युं.

किंमत—पोणो आनो.

शिक्षकोने सूचना.



ए तो जाणीतुं छे के बाळकोनुं हृदय घणुं कोमळ होय छे जेथी जे वात न्हानपणमां छोकराओनां हृदयमां उतारी देवाय छे तेने तेओ जिंदगी सुधी भूलता नथी, ए माटे धर्मनुं शिक्षण आपवामां घणीज काळजी राखवी जोईए अने न्हानपणथीज तेओने दरेक विषय सारी रीते समजाववो जोईए अने ए माटे सौथी सारो रस्तो एज छे के चोपडीओमांथी उदाहरणो वडे मोढेथी शिक्षण आपवुं के जेथी साधारण रीते बाळको समजी जशे अने तेमनुं मन पण भणवामां लागशे.

आ पहेला भागमां बतावेला जीव, अजीव, त्रस अने स्थावरना भेदो छबीओ, चित्रोद्वारा तथा बीजी वस्तुओथी समजाववा जोईए अने दरेक पाठ पुरो थाय के तेनी नीचे आपेला सवालो अथवा एवा बीजा सवालो विद्यार्थीओने पूछवा, तेमज समजाववा जोईए.

कर्ता.



॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

बालबोध जैनधर्म।

भाग पहेलो.

पाठ पहेलो.

णमोकार मंत्र.

गाथा—

णमो अरहंताणं,
णमो सिद्धाणं,
णमो आइरीयाणं,
णमो उवज्झायाणं,
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥१॥

अर्थः—अरहंतोने नमस्कार हो, सिद्धोने नमस्कार हो, आचार्योने नमस्कार हो, उपाध्यायोने नमस्कार हो तथा लोकमां सर्वे साधुओने नमस्कार हो.

णमोकार मंत्रनो महिमा.

एसो पंच णमोयारो, सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं ॥ २ ॥

अर्थ—आ पांच नमस्कार मंत्र सर्वे पापोनो नाश करनार छे अने सर्वे मंगलोमां पहेलुं मंगल छे.

સવાલો.

૧–ણમોકાર મંત્ર શુદ્ધ બોલો.
૨–આ મંત્રનો મહિમા શું છે ?
૩–આ મંત્રમાં કેટલા અક્ષર છે ?
૪–આ મંત્રમાં કોને કોને નમસ્કાર કર્યા છે ?

पाठ बीजो.

वर्तमान चोवीस तीर्थंकरोनां नाम.

१–ऋषभनाथजी, २–अजितनाथजी,
३–संभवनाथजी, ४–अभिनन्दननाथजी,
५–सुमतिनाथजी, ६–पद्मप्रभुनाथजी,
७–सुपार्श्वनाथजी, ८–चन्द्रप्रभुनाथजी,
९–पुष्पदन्तनाथजी, १०–शीतलनाथजी,
११–श्रेयांसनाथजी, १२–वासुपूज्यनाथजी,
१३–विमलनाथजी, १४–अनन्तनाथजी,

---

१ **णमुक्कारो** तथा **णमोक्कारो** पण पाठ छे.

पांच परमेष्ठीना नाम–अर्हंत, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय अने सर्वसाधु ए पांचने पंचपरमेष्ठी कहे छे.

१५–धर्मनाथजी,	१६–शांतिनाथजी,
१७–कुन्थुनाथजी,	१८–अरनाथजी,
१९–मल्लिनाथजी,	२०–मुनिसुव्रतनाथजी,
२१–नमिनाथजी,	२२–नेमिनाथजी,
२३–पार्श्वनाथजी,	२४–महावीरनाथजी,

आमांथी ऋषभने आदिनाथ, पुष्पदंतने सुविधिनाथ अने महावीरने श्री वर्द्धमान, सन्मति, अतिवीर अने वीर पण कहे छे.

चोवीस तीर्थंकरोनां चिह्न.

१–वळद, २–हाथी, ३–घोडो, ४–वांदरो, ५–चकवो, ६–कमळ, ७–साथीयो, ८–चंद्र, ९–मगर, १०–कल्पवृक्ष, ११–गेंडो, १२–पाडो, १३–सुवर, १४–साहुडी, १५–वज्र-दंड, १६–हरण, १७–बकरो, १८–माछली, १९–कळश, २०–काचबो, २१–रातुं कमळ, २२–शंख, २३–सर्प, २४–सिंह.

સવાલો.

૧. પાંચમા, દશમા, વીસમા અને ચોવીસમા તીર્થંકરનાં નામ કહો.

૨ બધું મળીને તીર્થંકર કેટલા છે? તથા પહેલા અને છેલ્લા તીર્થંકરનું નામ શું છે તે કહો.

૩. એવા કયા કયા તીર્થંકર છે કે જેનાં નામ એકથી વધારે છે?

૪. સુવિધિનાથ કેટલામા તીર્થંકર છે? એના પહેલાના તીર્થંકરોનાં નામ કહો.

૫. તીર્થંકર ચોવીસજ હોય છે કે વધારે ઓછા પણ હોય છે?

૬. ચંદ્રપ્રભ, વિમલનાથ, મલ્લિનાથ અને વાસુપૂજ્ય એ તીર્થંકરોનાં ચિન્હો કયાં કયાં છે તે કહો.

पाठ त्रीजो.

जीव अने अजीव.

जीव—एने कहे छे के जेमां जीव होय, जे जीवतो होय अने जेमां जाणवानी शक्ति होय. जेमके—पुरुष (मरद), स्त्री (बायडी), घोडा, बळद, कीडी, मंकोडा वगेरे.

भावार्थ—जगतमां आपणे जेटला पुरुष, स्त्री, पशु, पक्षी, कीडी, मंकोडा वगेरेने खाता, पीता, फरता, हरता देखीए छिये ते बधामां जीव छे.

अजीव—एने कहे छे के जेमां जीव होतो नथी, जेमके—सुकी माटी (मंटोडो), ईंट, पत्थर, लाकडुं, टेबल, खुरशी, कलम, कागळ, टोपी, रोटली, बाटी वगेरे.

जीवना भेद.

जीव बे प्रकारना होय छे—एक मुक्त जीव अने बीजा संसारी जीव.

१. मुक्त जीव एने कहे छे के जे संसारथी मुक्त थई गया छे एटले जेनो मोक्ष थई गयो छे अने जेणे सदाने माटे साचुं सुख प्राप्त करी लीधुं छे अने जे कदि पण संसारमां फरीथी आवता नथी ते.

२. संसारी जीव ते छे के जे संसारमां भ्रमण करी रहेला छे अने जन्ममरणनां दुःख सहन करी रहेला छे. संसारी जीव बे प्रकारना होय छे–१.–त्रसजीव, २–स्थावरजीव.

त्रसजीव एने कहे छे के जे पोतानी इच्छाथी चालता फरता होय, व्हीता होय, न्हासता होय तथा खावानुं शोधता होय एटले–बेइंद्रिय, त्रणइंद्रिय, चारइन्द्रिय अने पंचेंद्रिय जीव। जेमके–इयळ, कीडी, मांखी, वांदा, घोडो, बळद, मनुष्य वगेरे.

स्थावरजीव एटले एकेंद्रिय जीव, एने कहे छे के जे उपजे छे, वधे छे, अने मरे छे परंतु पोतानी मेळे हाली चाली शकता नथी. जेमके–पृथ्वी (जमीन), अप (पाणी), तेज (अग्नि), वायु (हवा), वनस्पति (झाड वगेरे).

સવાલો.

૧. ઝાડ, ઊંદર, પોપટ, વાઘ, સમડી, હાથી, ઘોડો, જોડા, બકરી, રૂપિયા, પવન, દીવો, કાગળ, કેરી, પાન, કાન, ગાડી, ઘોડી, સાડી, દાઢી, લાકડાં, ચામડાં, વાલ, દાળ, અને તરવાર આ બધામાં જીવ કોણ છે અને અજીવ કોણ છે ?

૨. ત્રસ અને સ્થાવરમાં શું ભેદ છે તે ઉદાહરણ આપીને બતાવો.

૩. ત્રસ જીવ કેટલા અને કયા કયા છે ?

૪. સ્થાવર જીવ કેટલા પ્રકારના અને કયા કયા છે ?

૫. હાથી, પાણી, ઘોડો, હવા, કુતરો, બિલાડી, દેવતા (અગ્નિ) અને કેરી આ જીવોમાંથી ત્રસ કયા છે અને સ્થાવર કયા છે ?

૬. મુક્ત જીવ સંસારમાં આવે છે કે નહીં ? શું તમે જેટલા જીવ જુઓ છો તે બધા સંસારી છે ?



पाठ चोथो.

इन्द्रियो.

इन्द्रिय-एने कहे छे के जेनी मारफते जीव ओळखी शकाय. ते इन्द्रियो पांच होय छे-१. स्पर्शनइन्द्रिय अर्थात त्वचा (चामडी). २. रसनाइन्द्रिय एटले जीभ. ३. घ्राण-इन्द्रिय एटले नाक. ४. चक्षुइन्द्रिय एटले आंख. ५. कर्ण-इन्द्रिय एटले कान.

स्पर्शनइन्द्रिय-एने कहे छे के जेने अडकवाथी हलकुं, भारी, लुखुं, चीकणुं, कोमळ, कठण, ठंडुं, गरम वगेरेनुं ज्ञान थाय. जेमके-देवताने अडकवाथी गरम अने पाणीने अडक-वाथी ठंडुं मालम पडे छे वगेरे.

रसनाइन्द्रिय-एने कहे छे के जेनाथी खाटो, मीठो, खारो, कडवो, तीखो, कषायलो (कटाणो) रसनुं (स्वादनुं) जे ज्ञान थाय ते. जेमके-पेंडो चाखवाथी मीठो, लीमडानां पांदडां कडवां, मरचां तीखां अने लींबु खाटां मालम पडे छे.

घ्राणइन्द्रिय-एने कहे छे के जेनाथी सुगन्ध (खुशबो) अने दुर्गन्ध (बदबो) नुं ज्ञान थाय छे ते. जेमके गुलाब, केवडाना फूलोथी सुगंध अने ग्यासतेलना तेलथी दुर्गंध आवे छे.

चक्षुइन्द्रिय-एने कहे छे के जेनाथी काळो, पीळो, वादळी, लाल अने सफेद रंगनुं तथा आ रंगोनी मेळवणीथी अनेक

प्रकारना रंगोनुं ज्ञान थाय छे ते. जेमके—दूध, दहीं, चांदी सफ़ेद छे, कोयला काळा छे अने लोही लाल छे, सोनुं पीळुं अने मोरनी पांख वादळी छे.

कर्णइन्द्रिय—एने कहे छे के जेनाथी आदमी, जानवर वगेरेनो अवाज जाणी शकाय छे ते.

સવાલો—

૧—ઇન્દ્રિયો કેટલી હોય છે તેનાં નામ કહો.

૨—ત્રીજી અને પાંચમી ઇન્દ્રિયથી શું જાણી શકાય છે ?

૩—સુંઘવુ અને જોવું એ કઇ કઇ ઇન્દ્રિયનું કામ છે ?

૪—કીડીને આંખ હોતી નથી ત્યારે તે મીઠાઇ વગેરેની પાસે કેવી રીતે ચાલી જાય છે ?

૫. એક જાનવરની પાસ બંદૂક ફોડી ત્યારે તે ઊડયું નહીં, આનું શું કારણ છે ? એવું કયું જાનવર છે ?

૬. ઇન્દ્રિય વગર જીવ હોઇ શકે કે નહીં ?



पाठ पांचमो.

पांच प्रकारना जीव.

एकेन्द्रियजीव—एने कहे छे के जेने मात्र एकज स्पर्शन-इन्द्रिय होय छे. जेमके—माटी, पाणी, अग्नि, पवन, फळ, फूल वगेरे.

बेइन्द्रियजीव—एने कहे छे के जेने स्पर्शन अने रसना आ बे इन्द्रिय होय छे. जेमके—इयळ, किल्लां, भूंड, शंख, अळसिया, छीप वगेरे.

त्रणइन्द्रिय जीव– एने कहे छे के जेने स्पर्शन, रसना अने घ्राण आ त्रण इन्द्रियो होय छे ते. जेमके–कीडी, कीडा, मांकड, मंकोडा, जू वगेरे.

चारइन्द्रिय जीव–एने कहे छे के जेने स्पर्शन, रसना, घ्राण अने चक्षु आ चार इन्द्रियो होय छे ते. जेमके भमरो, माखी, मच्छर, तीड, करोळीयो वगेरे.

पांचइन्द्रिय जीव–एने कहे छे के जेने पांचे इन्द्रियो होय छे ते. जेमके–देव, नारकी, मनुष्य, पशु वगेरे.

સવાલો.

૧. માખી, બળદ, કૂતરો, સાપ, કીડી, ઇયળ, છીપ. હાથી, દેવતા અને પાણી–આ જીવને કઇ કઇ ઇન્દ્રિયો હોય છે ?

૨. ચાર ઇન્દ્રિય જીવોમાં બે ઇન્દ્રિય જીવોથી શું વધારે છે ?

૩. જે જીવને આંખ હોય છે તે જીવને નાક હોય છે કે નહીં ? અને જે જીવને નાક હોય તે તેને આંખ હોય છે કે નહીં ?

૪. તમને કઇ કઇ ઇન્દ્રિયો છે ? સ્થાવર જીવને કઇ કઇ ઇન્દ્રિયો હોય છે ?

૫. એક માણસ જન્મથી આંધળો ઉત્પન્ન થયો હોય છે તો કહો કે તેને કઇ કઇ ઇન્દ્રિયો છે ?

૬. મૂંગા અને બહેરા મનુષ્યમાં શું ફેર છે ?

૭. કઇ ઇન્દ્રિય તમોને વધારે કામમાં આવે છે અને કઇ ઇન્દ્રિય તમને વધારે ગમે છે ?

૮. અમે એક એવો મનુષ્ય જોયો કે જેને જીભ, આંખ, કાન કંઇ પણ નહોતું તો કહો કે અમારૂં કહેવું સાચું છે કે નહીં ?

૯. જ્યારે મનુષ્યને પાંચે ઇન્દ્રિય હોય છે તો બહેરાં મૂંગાને માણસ કહેવો જોઇએ કે નહીં ?

૧૦. ત્રણ ઇન્દ્રિય જીવ થવું સારૂં છે કે ચાર ઇન્દ્રિય જીવ ?

उपयोगी शिखामणी.

१. भणवामां मन लगाडो.
२. मोटा पुरुषोने मान आपो.
३. नित्य साचुंज बोलो.
४. कह्या वगर कोई वस्तु लो नहीं.
५. कोईनुं पण मन दुखवो नहीं.
६. सर्वेनी साथे मीठां वचन बोलो.
७. शरीर हमेशां साफ राखो.
८. पाणी बेवडे गळणेथी गाळीने पीओ.
९. भाई व्हेनो साथे हेत राखो.
१०. बधाने 'जी' कहीने विनयथी बोलावो.
११. सवारमां उठी णमोकार मंत्र अने स्तुति भणी जाओ.
१२. ब्रह्मचर्य व्रत पाळो.
१३. लालच कदि पण करो नहीं.
१४. मांस, मद्य अने दारूने कदि अडको नहीं.
१५. रात्रि भोजन (रात्रे जमवुं) कदि पण करो नहीं.
१६. मा, बाप अने गुरु साथे विनयथी वर्तो.
१७. कोईनी चाडी (चुगली) करो नहीं.
१८. नित्य दर्शन करवानो नियम राखो.
१९. दर्शन कर्या वगर नहीं जमो.

पाठशाळा माटे उपयोगी पुस्तको.

बाळबोध जैनधर्म भाग १ लो (गुजराती)	०)॥।
बाळबोध जैनधर्म भाग २ जो ,,	०)-।
बाळबोध जैनधर्म भाग ३ जो ,,	०)=
बाळबोध जैनधर्म भाग ४ थो ,,	०।
छः ढाळा (गुजराती अन्वय तथा अर्थ साथे)	०।
रत्नकरण्डश्रावकाचार (अन्वय अर्थ साथे हिन्दी)	०।-)
द्रव्यसंग्रह (अन्वय अर्थ साथे हिन्दी)	०।
तत्त्वार्थसूत्र (गुजराती अर्थ साथे)	०।=-)
आलोचना पाठ (गुजराती अन्वय अर्थ साथे)	०)-॥
जैनसिद्धान्तप्रवेशिका (गोपाळदासजी कृत)	०।=)
भक्तामर स्तोत्र (मूळ अने भाषा)	०)-।
दर्शन पाठ ०)- आलोचनापाठ सामायिकपाठ	०)-
मेरी भावना ०)॥ प्रातःस्मरण मंगळपाठ	०)=
छत्तीसी (पंच परमेष्ठीना गुण)	०)-
पंचकल्याणक पाठ (हिन्दी अन्वय अर्थ साथे)	०।
सामायिकपाठ (महाचंद्रजीकृत, मिच्छामि दुक्कडं स०	०)-॥

मळवानुं स्थळः—

मैनेजर, दिगम्बर जैनपुस्तकालय, चंदावाडी—सूरत.